दृष्टिहीन बालकों की विशेषतायें

अपर्णा द्विवेदी
शोध छात्रा,
वनस्थली विद्यापीठ,
(राज.)

प्रो.किन्शुक श्रीवास्तव
प्रोफेसर,
संगीत (गायन)
वनस्थली विद्यापीठ,
(राज.)

कहने को तो विशेषतायें हर किसी व्यक्ति में होती हैं, पर यहाँ हम बात किसी आम व्यक्ति की नहीं कर रहे हैं, हम बात करेंगे उन विशिष्ट बालकों जो इस रंगभरी दुनिया को न ही तो कभी देख पाये हैं और शायद ही भविष्य में कभी देख पायें पर फिर भी उनका खुद का जीवन भले ही कितना अंधकार भरा क्यों न हो पर इसके बावजूद भी हम आम इंसानों के जीवन में पूरे मन से और ज्यादा रंग भर देते हैं।

अब आपके अन्दर ये विचार उठ रहे होंगे कि जो बालक देख नहीं सकता उसके अंदर किस प्रकार की और कैसी विशेषतायें हो सकती हैं? आपका ऐसा सोचना कुछ हद तक तो जायज़ है पर आप एक बात भूल रहे हैं जब ऊपर वाला हमें धरती पर भेजता है और उसमें भी किसी एक अंग के बिना भेजता है तो उसमें कोई न कोई विशेषता जरूर देकर भेजता है, और जिस विशेषता के लिये उन्हें एक और इन्द्रि के साथ ही धरती पर भेजते हैं। जिसे हम छठी इन्द्रि के नाम से जानते हैं।

तो आइये सर्वप्रथम हम इनकी इन्द्रियों के विषय में कुछ चर्चा करते हैं।

1. **इन्द्रियों में सक्रियता** – जैसा कि हम सभी लोग जानते हैं कि महाभारत काल में जब पाँडु पुत्र अर्जुन सुभद्रा जी को चक्रव्यूह तोड़ने की विधि सुना रहे थे तब वो गर्भ से थीं और विधि सुनते–सुनते ही उन्हें नींद आ गयी और वो सो गयीं फिर वो विधि अधूरी ही रह गयी किंतु यहाँ खास बात उनके सोने की नहीं अपितु उनके गर्भ में पल रहे उस शिशु की ज़्यादा है जिसका नाम अभिमन्यु था और माता सुभद्रा जी के सो जाने की वजह से वो विधि अपूर्ण रह गयी क्योंकि वह विधि अकेले सुभद्रा जी ही नहीं सुन रहीं थी बल्कि उनके गर्भ में पल रहे उनके पुत्र अभिमन्यु जी भी सुन रहे थे और इसी के परिणाम स्वरूप जब उन्हें कौरवों ने चक्रव्यूह में घेरा तो वो उसे तोड़ नहीं पाये इसी कारण वो वीरगति को प्राप्त हुये, लघुकथा के अनुसार ये बात तो समझ आ ही गयी कि इन्द्रियां जन्म पश्चात ही नहीं बल्कि जन्म पूर्व से भी कार्य करना शुरु कर देतीं है। बस अन्तर सिर्फ यह होता है कि कुछ इन्द्रि जन्म पूर्व से ही तो कुछ जन्म पश्चात् कार्य करना शुरु करतीं हैं, जैसे–

जन्म के थोड़े ही घण्टों के पश्चात ज्ञानात्मक क्रियायें प्रारम्भ हो जाती हैं।

जब बच्चा 30 घण्टे का होता है तो अधिक प्रकाश मिलने पर अपनी आंखों को मिचकाने लगता है अर्थात उसकी ज्ञानात्मक क्रियायें प्रारंभ हो जाती हैं और वह तेज प्रकाश से बचने के लिये अपनी आँखों को बन्द करने लगता है। तो इस तथ्य के अनुसार भी हम समझ सकते हैं कि इन्द्रियां स्वत: ही प्रकृति के सम्पर्क में आते ही अपना कार्य प्रारंभ कर देती है। जैसे – बालक की पाँच ज्ञानेन्द्रियां होती हैं– आँख, नाक, कान, जीभ तथा त्वचा इन ज्ञानेन्द्रियों का काम बालक को उत्तेजित करना होता है। ये उत्तेजनायें भी पाँच प्रकार की होती हैं। आँख की प्रकाश द्वारा, कान की आवाज द्वारा, नाक की गंध, जीभ की स्वाद तथा त्वचा की ज्ञानेन्द्री स्पर्श द्वारा उत्तेजना ग्रहण करती है, बच्चों में धीरे–धीरे सभी ज्ञानेन्द्रियां सचेष्ट क्रियाशील हो जाती हैं।

ये चर्चा तो हुयी उन इन्द्रियों के विषय में जो स्वभाविक रूप से प्रत्येक बालक में जन्मपूर्व से समन्वित होती हैं, परन्तु जिस भी बालक में इनमें से एक भी इन्द्रि का समावेश नहीं होता है तो उन बच्चों में एक अलग इन्द्रि का समावेश होता है इसे हम छठी इन्द्रि के नाम से जानते हैं और किसी भी बालक में यदि इस इन्द्रि का सामवेश होता है तो वो अपने और दूसरे के लिये एक उदाहरण के रूप में साबित होता है और इसी को हम इन्द्रियों में सक्रियता का नाम देते हैं। इसके साथ ही कहीं – कहीं इन्द्रियों में सक्रियता खुद व खुद होती है पर कहीं – कहीं हम आम व्यक्तियों को इन बालकों की इन्द्रियों में सक्रियता लाने की कुछ और प्रशिक्षण इनकी ज्ञानेन्द्रियों में विकास के लिये देना आवश्यक होता है।

ज्ञानेन्द्रियां प्रशिक्षण में यह छात्र अनेकों प्रकार से अपने आप को शिक्षित करते रहते हैं। खाने–पीने की वस्तुयें, कपड़ों की पहचान इत्यादि। अनेकानेक बातों में यह पूरी तरह से अपने ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण को मजबूत करते रहते हैं। इसमें – स्पर्श शक्ति का विकास सूंघना तथा चखना इसके साथ ही खेल, समाजिकता एवं सांस्कृतिक शिक्षा तथा योग आदि। 3.

सृजनात्मकता के प्रकार – यदि मन में हो चाह, तो कौन रोकेगा हमारी राह।

जी हाँ ये पंक्ति इन बच्चों के लिये ही हैं कहने का अर्थ सिर्फ इतना है कि, यदि इन बालकों के पास दृष्टि का अभाव है तो इसका अर्थ ये नहीं है कि इनकी सारी इन्द्रियां शिथिल पड़ गयीं है जिसे सिर्फ बेबसी पर रोना ही आता है तो वो अगर आँखों से देख ही सकता है तो भी वो कुछ नहीं कर सकता है और यदि उसके पास दृष्टि का अभाव है पर यदि वो अन्दर से चाहता है कि वो शान्त नहीं बैठ सकता उसे कुछ करना है तो वह अपना कार्य पूरी श्रद्धा के साथ करता है। जिसके लिये वो सबसे पहले ये सोचता है कि ऐसे कौन से कार्य है जो वो कर सकता है, जैसे– मिट्टी के बर्तन बनाना, खिलौने बनाना, सिलाई कढ़ाई करना अपने गले से अलग–अलग आवाजें निकालना, संगीत शिक्षा के बाद संगीत कक्षायें लगाना इत्यादि।

इनके सृजनात्मकता के प्रकार हम प्रत्यक्ष तो देखते ही हैं साथ ही हमें कई फिल्मों में भी देखने को मिल जाते हैं। जैसे – "हमको तुमसे प्यार है" में अमीषा पटेल ने एक नेत्रहीन लड़की का किरदार निभाया है पर उसमें नेत्रहीन होने के साथ ही मूर्तिकला का हुनर भी दिखाया गया है। इसके साथ ही हाल ही में प्रसारित हुई फिल्म "काबिल" में दोनों मुख्य कलाकारों ने भी नेत्रहीनों का किरदार अदा किया है जिसमें एक कई प्रकार की आवाजें निकालकर टेलिविजन के लिये कार्य करता है तो दूसरी अपनी संगीत कक्षायें चलाकर अपना घर चलाती है। अब आप सोच रहे होंगे कि संगीत में रूचि कैसे, तो चलिये अब हम संगीत में रुचि अर्थात सांगीतिक सृजनात्मकता के विषय में कुछ चर्चा करते हैं।

सांगीतिक सृजनात्मकता – सांगीतिक सृजनात्मकता के लिये सर्वप्रथम तो हमारा विषय में रूझान होना अति आवश्यक है क्योंकि किसी भी विषय में जब तक आपका रूझान न हो तब तक न ही तो आप उस विषय के बारे में सोचेंगे और न ही आप उसे समझने की कोशिश करेंगे ऐसे ही संगीत जैसे विषय को समझने के लिये भी हमें सर्वप्रथम संगीत में रुचि होना आवश्यक है, जैसे कि दृष्टिहीन बालकों को एक बार तो संगीत शिक्षा न भी दी जाये पर उनमें संगीत के प्रति रूझान अर्थात संगीत में रुचि उत्पन्न होने लगती जिसके बाद उनमें खुद से ही सीख के या फिर किसी संगीत शिक्षक के द्वारा भी, संगीत को समझने व सीखने की सृजनात्मकता का विकास होता है।

जैसे –

संगीत में रुचि – मैं करीब 3 सालों से ऐसे बच्चों के साथ कार्य कर रही हूँ जिनमें से कुछ मूकबधिर हैं तो कुछ दृष्टिहीन भी हैं और उन्हीं के मध्य रहके मैंने इस बात का अनुभव किया है कि उन्हें अधिकतर संगीत में ज़्यादा रुचि होती है। उन्हीं में से एक बालक है जो कि ढोलक पर कई प्रकार के गीतों के साथ काफी अच्छे से संगत करता है।

सुन के सीखना – क्योंकि इन बालको के पास देखने की क्षमता तो होती नहीं है और इसी वजह से इनकी बाकी इन्द्रियां काफी तेज हो जाती हैं यही कारण है कि उनके श्रवण और स्मरण शक्ति काफी अच्छी होती है, तभी उनमें खुद के सीखने और याद रखने की एक अलग क्षमता होती है उन्हें सुनके सीखने के लिये आज के विज्ञान ने ऐसी–ऐसी तकनीकों को तैयार करके दिया है जिनकी मदद से वो उन्हें संगीत सीखने में काफी मदद देते हैं, जैसे– चिप, पैन ड्राइव, कम्प्यूटर, म्यूजिक सिस्टम, टी.वी., एम.पी.3, एम.पी.4, इत्यादि की मदद से उन्हें संगीत शिक्षा लेने में कुछ हद तक कठिनाई कम हो जाती है, क्योंकि वो इन्हीं यंत्रों के माध्यम से संगीत की बारीकियों को समझते हैं, कि उन्हें किस गाने को कहाँ से गाना है, किस पंक्ति के बाद अगली पंक्ति क्या होगी।

लय, ताल का बोध– जब हम दृष्टिहीन बालकों को संगीत शिक्षा देने की बात करते है तो हमें इस बात का भी स्मरण रखना चाहिये कि उन्हें सिर्फ हमें गाना सुनाना या मौखिक रूप से बताना नहीं होता है, बल्कि क्रियाबद्ध तरीके से उन्हें लयताल का बोध कराना भी होता है, कि हमें किस गाने को किस लय में गाना है, जैसे–विलम्बित, मध्य या द्रुत लय में और उसी लय के हिसाब से ही इस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है कि हम किस लय में अपनी प्रस्तुति दे रहे हैं तो उसी लय के अनुसार हमें बालकों को ताल का ज्ञान कराना भी आवश्यक होता है इसके साथ ही जहाँ हमें कुछ बालकों को लय ताल का बोध कराना पड़ता है तो कुछ बालक खुद व खुद सीख जाते हैं। जिसे मैं अभी आपको एक उदाहरण देकर बताऊंगी।

वादयों से तालमेल – वादयों से तालमेल का आशय यह है कि ऐसे बालक जिन्हें हम दृष्टिबाधित कहते हैं उन बालको के लिये वादयों के संग तालमेल के विषय में ज्ञान देना अति आवश्यक होता है क्योंकि ऐसे बालकों की दृष्टि इन्द्रियां तो एकदम शिथिल होती हैं तो उन्हें हम सिर्फ उनकी कर्ण इन्द्रियों के द्वारा ही सुना, सिखा और याद करा सकते हैं और इस तरह से याद कराने के लिये हमें ऐसे बालकों की शुरूआत छोटे–छोटे संगीत वादयों की ध्वनियों को उन्हें सुनाकर हर एक वादय की ध्वनि से अवगत कराना ही हमारा कार्य है। जिससे कि बालक हर वादय की ध्वनि को पहचानना सीख जाये तदोपरान्त हमें दृष्टि बाधित बालकों को स्वरों के विषय में अवगत कराना चाहिये कि कौन सा स्वर किसके बाद आता है उसको हम कितने सप्तकों में गाते हैं व उनके प्रकारों के विषय में भी समझाना आवश्यक होता है।

इसके साथ ही उन्हें यह भी समझाना आवश्यक है कि यदि हम हारमोनियम द्वारा अपनी प्रस्तुति दे रहे हैं तो उसके साथ किस वादय की आवश्यकता होती है व उसे हारमोनियम के साथ मिलाना भी आवश्यक होता है।

इस प्रकार हम दृष्टि बाधित बालकों को वादयों को पहचानना व उनके साथ तालमेल बिठाना सिखा पाते हैं और इसके साथ ही उनकी कर्ण इन्द्रियां भी वादयों के विषय में परिपक्व बनाना शुरू कर पाते हैं।

अब मैं ऐसे ही बालको का एक छोटा सा उदाहरण देने जा रही हूँ जिनपे मैने स्व अध्यन कर इस बात का अनुभव किया है, जिनमें से मै तीन बालकों का उदाहरण दे रही हूँ जिनमें गाने का हुनर तो तीनो के पास है किन्तु भिन्न– भिन्न तरह से है जैसे–

पहला बालक – पहले बालक का नाम राहुल है जिसकी उम्र करीब 13 से 14 वर्ष है जो दृष्टिबाधित तो है पर उसमें संगीत के प्रति खास लगाव होने के साथ–साथ उसे गीतों को सुनके सीखना फिर चाहें वो मौखिक रुप से, टेप रिकार्डर या फिर मोबाइल फोन से सीखता है और उसके साथ ही उसे ढोलक द्वारा किस प्रकार से संगत करनी है वह इन सब को स्वतः ही सीखता रहा है अभी भी मेरे द्वारा या किसी भी संगीत की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों से पूछता ही रहता है। इसके साथ ही उसे कन्ठ से कोयल की आवाज़ निकालने का हुनर भी आता है अर्थात् ऐसे बालकों के विषय में ये कहना गलत नही होगा कि इन्हें ईश्वरीय देन की प्राप्ति जन्म से ही होती है।

द्वितीय बालक – इस बालक का नाम शिवा है जिसकी उम्र लगभग 10 से 11 वर्ष होगी । वो भी संगीत के प्रति रुझान रखने वाला बालक है इसके साथ ही वो ढोलक भी बजाना जानता है पर वो राहुल की अपेक्षा थोड़ा कम अनुभवी है। अर्थात संक्षिप्त में हम यह कह सकते हैं कि शिवा को राहुल की अपेक्षा प्रशिक्षण की ज़्यादा आवश्यकता है।

तृतीय बालक – अब बात आती है तृतीय बालक गगन की जो करीब 7 से 8 वर्ष का है और इस बालक के कण्ठ में भी एक कला छिपी हुयी है वो है कौए की आवाज़ निकालना, इसके साथ ही उसे गायन का शौक तो है पर उसे संगत कैसे देनी है उसके लिए उसे हर चीज़ शुरू से समझानी पड़ती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तीनो ही बालकों में संगीत के प्रति प्रेम तो है किन्तु तीनो को अलग–अलग प्रकार से संगीत सीखने और सिखाने की आवश्यकता नज़र आती है। किसी में ईश्वरीय देन है तो किसी में नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. मंगल के.पी.सिंह, आर. एन.यू. जी. सी. बी. एड.दिग्दर्शन, अग्रवाल पब्लिकेशनस,आगरा–2 पृ0–115
2. मंगल के.पी.सिंह, आर. एन.यू. जी. सी. बी. एड.दिग्दर्शन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स,आगरा–2 पृ0–115
3. वर्मा शीतल, सर्व शिक्षा अभियान प्रकाशन, इटावा, पृ0–22